वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 21 249 अंक : 9

प्रवचनसार पद्यानुवाद

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार

श्रुतज्ञान से जो जानते ज्ञायकस्वभावी आतमा।
श्रुतकेवली उनको कहें ऋषिगण प्रकाशक लोक के।।33।।
जिनवर कथित पुद्गल वचन ही सूत्र उसकी ज्ञप्ति ही।
है ज्ञान उसको केवली जिनसूत्र की ज्ञप्ति कहें।।34।।
जो जानता सो ज्ञान आतम ज्ञान से ज्ञायक नहीं।
स्वयं परिणत ज्ञान में सब अर्थ थिति धारण करें।।35।।
जीव ही है ज्ञान ज्ञेय त्रिधावर्णित द्रव्य हैं।
वे द्रव्य आतम और पर परिणाम से संबंद्ध हैं।।36।।
असद्भूत हों सद्भूत हों सब द्रव्य की पर्याय सब।
सद्ज्ञान में वर्तमानवत् ही हैं सदा वर्तमान सब।।37।।
पर्याय जो अनुत्पन्न हैं या नष्ट जो हो गई हैं।
असद्भावी वे सभी पर्याय ज्ञानप्रत्यक्ष हैं।।38।।
पर्याय जो अनुत्पन्न हैं या हो गई हैं नष्ट जो।
फिर ज्ञान की क्या दिव्यता यदि ज्ञात होवें नहीं वो।।39।।
जो इन्द्रियगोचर अर्थ को ईहादिपूर्वक जानते।
वे परोक्ष पदार्थ को जाने नहीं जिनवर कहें।।40।।

आत्मा की शोभा

कोई जीव तिर्यंच हो और सम्यग्दर्शन प्राप्त कर चुका हो, रहने को मकान न हो; तो भी वह आत्मगुणों से शोभित होता है और मिथ्यादृष्टि जीव सिंहासन पर बैठा हो; तो भी वह नहीं शोभता, प्रशंसा नहीं पाता। बाहर के संयोग से आत्मा की कुछ शोभा नहीं है। आत्मा की शोभा तो अन्दर के सम्यग्दर्शनादि गुणों से है।

अरे ! छोटा-सा मेंढक हो, समवशरण में बैठा हो, वह भगवान की वाणी सुनकर अन्दर में उतरकर सम्यग्दर्शन द्वारा चैतन्य के अपूर्व आनन्द का अनुभव करे, वहाँ अन्य किस साधन की आवश्यकता है ?

इसीलिये कहा है कि चाहे पापकर्म का उदय हो, फिर भी हे जीव ! तू सम्यक्त्व की आराधना में निश्चल रह। पापकर्म का उदय हो तो उससे कोई सम्यक्त्व की कीमत नहीं चली जाती, उससे तो पापकर्म निर्जरता जाता है। चारों ओर से पापकर्म के उदय से घिरा हो, अकेला हो; तो भी जो जीव प्रीतिपूर्वक सम्यक्त्व को धारण करता है, वह अत्यन्त आदरणीय है।

चाहे जगत में कोई उसे न मानें, चाहे औंधी (विपरीत) दृष्टिवाले उसका साथ न देवें तो भी वह अकेला मोक्ष के मार्ग में आनन्दपूर्वक चला जाता है। उसने शुद्ध आत्मा में मोक्ष का अमृतमार्ग देख लिया है, उस मार्ग पर निशंक चला जाता है। पूर्वकर्म का उदय उसके है ही कहाँ ? उसकी वर्तमान परिणति उदय की तरफ कुछ भी नहीं झुकती, उसकी परिणति तो चैतन्यस्वभाव की तरफ झुककर आनन्दमयी बन गयी है, उस परिणति से वह अकेला शोभायमान होता है।

जैसे जंगल में वन का राजा सिंह अकेला भी शोभित होता है, वैसे ही संसार में चैतन्य राजा सम्यग्दृष्टि अकेला भी शोभित होता है। सम्यक्त्व के साथ पुण्य हो तो ही वह जीव शोभा पावें ह्न पुण्य की ऐसी अपेक्षा सम्यग्दर्शन में नहीं है। सम्यग्दृष्टि पाप के उदय से भी जुदा (भिन्न) है और पुण्य के उदय से भी जुदा है। वह दोनों से भिन्न अपने ज्ञानभाव सम्यक्त्व से ही शोभित होता है।

ह्न श्रावकधर्मप्रकाश, पृष्ठ : 21

जिसके पास जो होता है, वह वही देता है

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 23 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है –

अज्ञानोपास्तिरज्ञानं ज्ञानं ज्ञानिसमाश्रयः।
'ददाति यत्तु यस्यास्ति' – सुप्रसिद्धमिदं वचः ।।23।।

अज्ञान अर्थात् ज्ञानरहित शरीरादि की उपासना से अज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्ञानी–सेवा अर्थात् ज्ञानी पुरुषों की सेवा से ज्ञान की प्राप्ति होती है; क्योंकि जिसके पास जो होता है, वह वही देता है – यह बात सुप्रसिद्ध है।

शरीर–वाणी–मन आदि में ज्ञान नहीं है, पुण्य–पाप आदि भावों में भी ज्ञान नहीं है। अतः जब ज्ञानरहित अज्ञानभाव की सेवा करेंगे तो अज्ञान की उत्पत्ति होती हैं, विकार की उत्पत्ति होती हैं और चतुर्गति परिभ्रमणरूप फल मिलता है।

एक मात्र भगवान आत्मा ही ज्ञानस्वरूप है, आत्मा को छोड़कर अन्य समस्त पुण्य–पापादिरूप भाव ज्ञानज्योति से रहित अज्ञानमूर्ति है, इसलिये उनकी सेवा करने से अज्ञान की ही उत्पत्ति होती है। पुण्य–पाप भाव की सेवा और उसमें एकाग्रता करने से विकार उत्पन्न होते हैं, वीतरागता नहीं तथा ज्ञानी की सेवा करने से ही ज्ञान प्राप्त होता है।

ज्ञानमूर्ति भगवान आत्मा स्वयं ही ज्ञानी है, जिसकी सेवा और एकाग्रता करने से ज्ञान की उत्पत्ति होती है। ऐसे ज्ञानी धर्मात्मा की सेवा करने से तेरे स्वयं में भी ज्ञान और आनन्द की प्राप्ति होगी ह्न ऐसा ज्ञानीजीव कहते हैं। इसप्रकार ज्ञानी की अर्थात् ज्ञान की सेवा करते समय भी दृष्टि निजस्वभाव पर रहे तो ज्ञान का फल प्राप्त होता है।

जो जिसकी सेवा करता है, उसके पास जो होगा, वह उसे प्राप्त होगा। जिसके पास जो वस्तु है ही नहीं, वह उस वस्तु की सेवा करे तो क्या प्राप्त करेगा ?

ज्ञानी मुनिराज कहते हैं कि शरीरादि जड़ पदार्थों की सेवा करने से अज्ञान होता है, ज्ञान नहीं; अतः जो जड़ पदार्थों की सेवा करता है, उसे अज्ञान की ही प्राप्ति होती है, ज्ञान की नहीं।

शरीर–कर्म तथा परपदार्थ के लक्ष्य से पुण्य–पाप के विकारीभाव उत्पन्न होते हैं।

जिसमें ज्ञान नहीं है, उसकी उपासना, सेवा करने से ज्ञान कहाँ से प्राप्त होगा, अज्ञान ही होगा। तू तो सत्चिदानन्दस्वरूप भगवान आत्मा है। सत्रूप शाश्वत ज्ञान और आनंद से भरपूर है। पुण्य-पाप भाव तो अचेतन तत्त्व है। हिंसा-झूठ आदि पापभाव है। दया-दान आदि पुण्यभावों की उपासना करें तो भी उनके अचेतनपना होने से कर्मबंधन ही होता है, ज्ञान नहीं होता।

एकतरफ अतीन्द्रिय ज्ञान और आनंद का बड़ा महासागर भगवान आत्मा है और एकतरफ ज्ञान-आनंद से रहित शरीर, परपदार्थ, कर्म, विकारीभाव आदि अचेतन तत्त्व है। चेतन-अचेतन में से अचेतन में एकाग्रता करे तो उसे अचेतनपना और दुःख ही प्राप्त होता है। इसप्रकार जो जिसकी सेवा करे, उसे वह प्राप्त होगा।

भगवान आत्मा तो पूर्ण ज्ञान और आनंद का पिण्ड है, वह रंग-गंध-स्पर्श आदि से रहित अरूपी है। स्वयं अनंतज्ञान, आनंद, स्वच्छत्व, प्रभुत्व स्वरूपी है। जीव का लक्ष जितना बाहर में अर्थात् परद्रव्यों, शरीर, कर्म, रागादि पर होगा, उतना उसे अज्ञान ही प्राप्त होता है। और जिसमें ज्ञान और आनंद की मुख्यता है - ऐसा जीव अनंत गुणों से भरपूर आत्मा के स्वभाव का लक्ष करे तो उसे ज्ञानादि अनंतगुणों की प्राप्ति होती है।

बहुत सीधी-सीधी भाषा में उच्च तत्त्व भर दिया है। पूज्यपादस्वामी जीव की खोटी मान्यता को छुड़ाकर स्वरूप की स्थापना करते हुये कहते हैं कि - हे भगवान तू प्रभू है, अकृत्रिम जीव है, स्वयंसिद्ध पदार्थ है। तू कृत्रिम ह्न किसी के द्वारा बनाया नहीं है। तू तो अनादि-अनन्त शाश्वत स्वयंसिद्ध पदार्थ है; परन्तु आज तक कभी भी अपने स्वभाव पर दृष्टि नहीं की है।

कोई कहता है कि पुण्यभाव भले ही चैतन्य से विपरीतभाव हों, फिर भी उन्हें परंपरा से मोक्ष का कारण कहा गया है न ? उससे कहते हैं - अरे भाई ! यह तो निमित्त का कथन है। सम्यग्दृष्टि को स्वरूप का भान है, वह शुभभाव छोड़कर वीतरागी होता है। वह तो भावना में भी राग परंपरा को अनर्थ का कारण मानता है। वस्तुतः अरागी वीतरागस्वरूप में दोष होता ही नहीं। स्वयं पर की ओर लक्ष करे तो पर्याय में राग-द्वेषादि दोष उत्पन्न होते हैं।

स्वयं के अनंत आनंद-शान्ति आदि अनंत गुणों की लक्ष्मी को संभालनेवाला सेठ कहलाता है, बाकी धनादि जड़लक्ष्मी को संभालनेवाला सेठ नहीं है, भिखारी है। राग,

पुण्य-पाप, धन, शरीर और विषयों को संभालनेवाला सेठ नहीं, गुलाम है। ऐसे विषयों की गुलामी करने से सेवा करने से आत्मा को जड़पने (अज्ञानपने) की प्राप्ति होती है।

अरे ! देव-शास्त्र-गुरु भी परद्रव्य हैं, उनका लक्ष्य करने से भी पुण्य की प्राप्ति होती है। पुण्य अर्थात् अज्ञानपना या अचेतनपना ही है। अज्ञान कहने से यहाँ मिथ्यात्व की बात नहीं है।

यहाँ दो अर्थ लिये हैं। ज्ञानी की सेवा करने से ज्ञान प्राप्त होता है - इसमें एक तो ज्ञानस्वरूप निजात्मा की सेवा अर्थात् उसमें एकाग्रता करने से सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होती है। दूसरा अर्थ यह है कि ज्ञानी पुरुष की सेवा से अर्थात् उसके द्वारा बताये हुए आत्मा के सेवन से अतंर में ज्ञान और आनन्द की प्राप्ति होती है। ज्ञानी का उपदेश तो यह है कि तेरा आत्मा चिदानन्दस्वरूप है, राग-द्वेष, पुण्य-पाप से रहित है, तू उसकी सेवा कर ! यदि इस उपदेश को स्वीकारकर अपने आत्मा की उपासना करेगा तो ज्ञान की प्राप्ति होगी।

आत्महित के इच्छुक जीवों के लिये यह उपदेश इष्टोपदेश है। इस ग्रन्थ की एक-एक गाथा में पुण्य-पाप को उड़ाकर, अपने आत्मा के स्वरूप की सेवा करके अपने आत्मा का हित करने का यह प्रिय उपदेश है।

यह लोकोक्ति तो प्रसिद्ध ही है कि **जिसके पास जो होता है, वह वही देता है** ह्न जैसे धनवान हो तो धन देता है और ज्ञानवान हो तो ज्ञान देता है। आत्मा आत्मा से माँगे, आत्मा की सेवा करे, आत्मा की एकाग्रता करे तो पर्याय में ज्ञान आनन्द आदि चैतन्यरत्नों का दान मिलता है; क्योंकि आत्मा ज्ञानादि अनन्त गुणों की बड़ी खान है। उसमें से चैतन्य-चमत्कार प्रगट होता है और जो जीव स्त्री-पुत्र, परिवार धनादिक की सेवा करता है, उसे पाप की प्राप्ति होती है, उसे सुख अथवा ज्ञान नहीं मिलता; क्योंकि उसके पास वह चीज है ही नहीं।

आत्मस्वभाव में विकार नहीं है; अतः आत्मा का लक्ष करने से विकार उत्पन्न नहीं होते और पुण्य-पाप आदि में ज्ञान नहीं है; अतः उनका लक्ष करने से ज्ञान कैसे प्राप्त होगा?

अहाहा ! 21 वीं गाथा से तो पूज्यपादस्वामी ने एक-एक गाथा में ज्ञानभारती उत्पन्न की है। इष्ट उपदेश है न ! चिदानन्द भगवान की सेवा और एकाग्रता करने से ही शांति प्राप्त होती है, अन्य कोई शांति प्राप्त करने का उपाय नहीं है। यह उपदेश ही इष्ट उपदेश है। **(क्रमशः)**

मोक्ष और मोक्ष का उपाय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की चौथी गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णियमं मोक्खउवायो तस्स फलं हवति परमणिव्वाणं।
एदेसिं तिण्ह पि य पत्तेयपरूवणा होई ।।4।।

रत्नत्रयरूप नियम मोक्ष का उपाय है; उसका फल परम निर्वाण है। इन तीनों का भेद करके भिन्न-भिन्न निरूपण होता है।

मोक्ष का उपाय रत्नत्रयस्वरूप है। आनन्दकन्द आत्मा की प्रतीति, ज्ञान और रमणता मोक्ष का उपाय है। उसका नाम नियम है। शुद्धात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य को अपनी श्रद्धा में न मानने का नियम लेना सम्यग्दर्शन है। मैं परिपूर्ण परमात्मा हूँ, इसके विपरीत अपूर्ण या विकारी मैं नहीं हूँ, ऐसा मानना प्रथम सम्यग्दर्शन का नियम है। शुद्ध चैतन्य के अतिरिक्त पुण्य-पाप को अथवा शरीर की क्रिया को अपनी न मानना वह मोक्षमार्ग का मूल नियम है। बाहर में यह चलेगा, यह नहीं चलेगा – यह तो राग है, यह मेरा स्वरूप नहीं है। स्वभावसन्मुख होकर चिदानन्द आत्मा का स्वरूप जानना, मानना और उसमें स्थिर होना ही नियम है और यही मोक्ष का उपाय है।

ऐसे नियम का फल परम निर्वाण है। आत्मा में तो दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों अभेद हैं; किन्तु भेद द्वारा वह अभेद समझाने के लिये दर्शन-ज्ञान-चारित्र के भेद करके भी कहने में आता है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ह्न इन तीनों के भिन्न-भिन्न लक्षण कहे, किन्तु वह तीनों आत्मा से भिन्न नहीं हैं।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान और चारित्र ह्न यह तीनों रत्न हैं, इन्हीं से मोक्ष प्राप्त होता है। समस्त कर्म के नाश से साक्षात् मिलनेवाला महा आनन्द का लाभ मोक्ष है।

देखो ! इस चैतन्यवस्तु के समझने की अंतरंग में जिज्ञासा, लगन और उत्साह होना चाहिये। आत्मा क्या है ? यह कभी सुना नहीं। समयसार की चौथी गाथा में आचार्यदेव कहते हैं कि शुद्धात्मा की बात जीव ने कभी सुनी ही नहीं, अन्दर रुचि प्रकट करके कभी सुनी नहीं। जिसको आत्म-रुचि जागृत हुई हो, उसको उस आत्मा के श्रवण-मनन की कितनी उत्सुकता होगी ?

समस्त कर्म के नाश से जो साक्षात् महा आनन्द की प्राप्ति होती है, उसका नाम मोक्ष है। शुभभाव भी कर्म का कारण है। मोक्षपद तो शुभ-अशुभ दोनों भावों से रहित है। वह जिसे रुचता है, उसे शुभ-अशुभ राग की रुचि छोड़नी चाहिये। दयादि भाव भी कर्मबन्ध के कारण हैं, उनके अभाव होने पर ही मोक्ष होता है। पैसे का लाभ, स्वर्ग का लाभ अथवा तीर्थंकर पद का लाभ ह्न इन सभी में आत्मा के आनन्द का लाभ नहीं होता; आनन्द तो पुण्य-पाप के अभाव से आत्मा में प्रकट होता है।

कर्म के कारण की रुचि छोड़कर अर्थात् पुण्य-पाप की रुचि छोड़कर शुद्ध चैतन्य की रुचि करे तो साधक के अमुक आनन्द तो प्रकट हो ही जाता है, पश्चात् पुण्य-पाप का सर्वथा अभाव करके साक्षात् महा आनन्द प्रकट होता है। जिसे कोई भी कर्म रुचता है, उसे आत्मा का मोक्ष नहीं रुचता तथा जिसे आत्मा की रुचि है, उसे कर्म के कारणरूप किसी भी शुभाशुभभाव की रुचि नहीं है।

समस्त कर्मों के नाश से साक्षात् महा आनन्द का लाभ नया मिलता है अर्थात् मोक्षपर्याय नई प्रकट होती है। संसारपर्याय का नाश करके मोक्षपर्याय प्रकट होती है। स्वभाव में शक्ति त्रिकाल है, उसमें से मोक्षपर्याय प्रकट होती है और उसमें महाआनन्द का लाभ है। साधक को सम्यग्दर्शन होने पर अपूर्व आनन्द तो प्रकट होता ही है, किन्तु मोक्षपद में तो महाआनन्द है।

उस महाआनन्द का उपाय पूर्वोक्त निरुपचार रत्नत्रयरूप परिणति है। पुण्य-पाप रहित चिदानन्द कारण-परमात्मा की श्रद्धा-ज्ञान और रमणता का नाम निरुपचार रत्नत्रय है।

श्रीमद् राजचन्द्रजी कहते हैं कि 'मोक्ष कह्यो निज शुद्धता' और यहाँ कहा कि 'मोक्ष कह्यो महा आनन्द'

ऐसी महाआनन्दरूप मोक्षदशा शुद्ध रत्नत्रय से प्रकट होती है। शुद्धरत्नत्रय ही

निरुपचार रत्नत्रय परिणति है। बीच में व्यवहार श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र का जो शुभराग आता है, वह वास्तव में रत्नत्रय नहीं है, वह तो उपचार रत्नत्रय है। त्रिकाल निजपरमात्मा की श्रद्धा-ज्ञान-रमणतारूप जो परिणति है, वह निरुपचार रत्नत्रय परिणति है और वही मोक्ष का उपाय है।

अनन्त काल में ऐसा रत्नत्रय ही प्रकट नहीं हुआ। अनन्त बार राजा हुआ, देव हुआ, पंचमहाव्रतधारी द्रव्यलिंगी साधु हुआ। किन्तु आत्मा के स्वभाव का भान किये बिना भटकता ही रहा। आत्मस्वभाव के आश्रय से रागरहित श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र की जो निरुपचार परिणति है, वही मोक्ष का उपाय है। संसार और मोक्ष यह दोनों पर्याय हैं। उसमें मोक्ष महाआनन्दरूप शुद्ध पर्याय है और उसका उपाय शुद्ध रागरहित रत्नत्रय परिणति है। परिणति अर्थात् पर्याय; निरुपचार रत्नत्रय अर्थात् वीतरागी रत्नत्रय, वह मोक्षमार्ग है। उस निरुपचार रत्नत्रय परिणति में दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों का समावेश हो जाता है और उस निरुपचार रत्नत्रय परिणति के भेद करके कहें तो सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र - ऐसे तीनों का भिन्न कथन होता है।

देवाधिदेव परमेश्वर सर्वज्ञदेव ने जो वस्तुस्वरूप कहा है, वह कभी जाना ही नहीं। जिसको एक समय में तीनलोक तीनकाल का ज्ञान है ह्न ऐसे सर्वज्ञ परमात्मा को वह परमात्मदशा कहाँ से प्रकट हुई ? अपनी आत्मा में शक्ति थी, उसी में से यह परमात्मदशा प्रकट हुई है। ऐसी शक्ति प्रत्येक आत्मा में भरी हुई है। उसकी श्रद्धा-ज्ञान करके उसमें एकाग्रता करना ही भगवान ने मोक्ष का उपाय कहा है। बीच में व्यवहाररत्नत्रय और शुभराग आता है, किन्तु वह निरुपचाररत्नत्रय नहीं है; निरुपचाररत्नत्रय तो राग रहित है। चैतन्य की शुद्ध परिणति प्रकट हुई, उसमें दर्शन-ज्ञान-चारित्र ह्न तीनों का समावेश हो जाता है। सम्यग्दर्शन परिणति है, गुण नहीं। परिणति अर्थात् पर्याय, दशा, हालत अथवा अंश। गुण तो त्रिकाल है, वह नवीन प्रकट नहीं होता; नवीन तो पर्याय प्रकट होती है। दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों को अभेद करके उसे रत्नत्रय परिणति कहा और उसके भेद करके कहने पर दर्शन-ज्ञान-चारित्र का भिन्न-भिन्न कथन होता है। उन दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों के लक्षण भी भिन्न-भिन्न हैं, जो आगे कहे जायेंगे। **(क्रमशः)**

शक्तियों का संग्रहालय : भगवान आत्मा

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार नामक ग्रन्थाधिराज पर परमपूज्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका लिखी है। उसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में अनेकान्त का विस्तृत वर्णन करते हुये आत्मा की 47 शक्तियों का वर्णन किया है, साथ ही अनेक कलश भी लिखे हैं। उन पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी ने समय-समय पर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रवचन किये हैं, जो पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रस्तुत हैं।

(गतांक से आगे .....)

यद्यपि निश्चयरत्नत्राय व व्यवहाररत्नत्राय भी एक-दूसरे के विरोधी हैं; तथापि सम्यग्दर्शन व मिथ्यादर्शन जैसे विरोधी नहीं हैं। ज्ञान अर्थात् आत्मा जबतक पूर्णता को प्राप्त नहीं हो जाता, तबतक ज्ञान व राग को एकसाथ रहने में विरोध नहीं है। शास्त्रों में निश्चय-व्यवहार की परस्पर मैत्री भी कही है; किन्तु वहाँ मैत्री का अर्थ मात्रा इतना है कि ये दोनों निचली भूमिका में एकसाथ रह सकते हैं; इसलिए निश्चय प्रगट होता है अथवा व्यवहार से निश्चय होता है - ऐसा कारण-कार्यपना कदापि नही है। मैत्री का अर्थ भी मदद करना नहीं है; क्योंकि निश्चय स्व-आश्रय से एवं व्यवहार पर-आश्रय से प्रगट होता है। निश्चय मोक्ष का कारण है और व्यवहार बन्ध का कारण है। दोनों हैं तो सर्वथा विरुद्ध; फिर भी वह व्यवहार निश्चय के साथ में रहकर भी श्रद्धा-ज्ञान-चारित्रा में बाधा उत्पन्न नहीं करता; तथापि ऐसे व्यवहार का उल्लंघन करके ही विशेष स्थिरता होती है। भाई ! वस्तुस्थिति जैसी है, उसे वैसा ही समझना पड़ेगा।

अब कहते हैं कि - देखो, 'निश्चयसम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पूर्णता से समस्त कर्मों का नाश होता है- यह व्यवहारनय का विषय है; क्योंकि कर्म तो परद्रव्य की दशा है न ! उन कर्मों का क्षय तो वस्तुतः अपने-अपने स्वकाल में उन्हीं कर्मों के कारण होता है। आत्मा में जो केवलज्ञान हुआ, उससे कर्मों का क्षय नहीं हुआ तथा कर्मों के क्षय के कारण केवलज्ञान हुआ हो - ऐसा भी नहीं है। एक को दूसरे

का कारण कहना व्यवहार से की गई कथनपद्धति मात्रा है। वस्तुतः तो सिद्धरूप से परिणमने की आत्मा की दशा एवं कर्मक्षयरूप कर्मपरमाणुओं की दशा - दोनों ही भिन्न-भिन्न परिणमन अपनी-अपनी तत्समय की योग्यता से होता है।

स्वाश्रय से स्वानुभव होने पर तथा उसमें वृद्धि होने पर जहाँ पर्याय पूर्णता को प्राप्त हुई, पूर्ण केवलज्ञान प्रगट हुआ, वह अस्खलित निर्मल स्वभाव है। इसे ही अरहंत व सिद्ध भगवन्तों की दशा कहा है। अब यहाँ व्यवहाररत्नत्राय का नाम-निशान भी नहीं है।

अरे भाई ! यह तो तेरे ही हित की बात है। अरे प्रभु ! तूने अनन्तकाल में क्या-क्या नहीं किया है ? एक आत्मा के आश्रय को छोड़कर शेष सब कुछ तो किया; एक आत्मा का आश्रय ही नहीं किया, इसीकारण धर्म की प्राप्ति नहीं हुई।

धवलाशास्त्रा में आया है कि - 'स्व' के आश्रय से प्रगट हुआ सम्यक् मतिश्रुतज्ञान केवलज्ञान को बुलाता है। इसका अर्थ यह है कि - जिसे 'स्व' के आश्रय से सम्यक् मति-श्रुतज्ञान प्रगट हुआ है, उसे शीघ्र ही केवलज्ञान होगा।

अब कहते हैं कि - इसप्रकार साधकरूप से और सिद्धरूप से - दोनों रूप से परिणमन करता एक ही ज्ञान आत्मवस्तु को उपाय-उपेयपने साधता है। देखो, उपाय-उपेयपना, साधक-साध्यपना - दोनों आत्मा की अवस्थायें होने से आत्मवस्तु में ही समाती हैं। ''सुनिश्चल पने ग्रहण किया हुआ' में जो ग्रहण शब्द है, उस 'ग्रहण' का अर्थ मात्रा जानने में पुख्ता प्रयोजनवान जानना चाहिए, आदरणीय नहीं। मोक्षमार्ग प्रकाशक में भी यही अर्थ किया है। समयसार की 12वीं गाथा की टीका में भी व्यवहारनय को जानने में आया हुआ प्रयोजनवान कहा है।

देखो, आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं - इसप्रकार दोनों में (उपाय-उपेय में) एक ज्ञानमात्र का अनन्यपना है अर्थात् दोनों में अन्यपना नहीं है। तू अन्दर में एक ज्ञानानन्दस्वरूपी चैतन्यमूर्ति आत्मा है न ! उसमें एकाग्र होने पर ज्ञान-श्रद्धा-आनन्द- शान्ति-स्थिरता-प्रभुता आदि एकसाथ पर्याय में प्रगट होते हैं। स्वरूप में ऐसी रमणतारूप निर्विकल्प परिणति उपाय है, साधकपना है। बीच में जो व्यवहार आता है, वह उपाय या साधकपना नहीं है; क्योंकि उसमें आत्मा अनन्य नहीं है।

अहाहा.....! आत्मा का साधकपना (उपाय) आनन्द की पर्याय है और

इसका साध्यपना (उपेय) भी उसी पूर्ण आनन्द की पर्याय है। अहा.! ये दोनों रूप अकेले ज्ञानमात्रा-चैतन्य चमत्कार प्रभु आत्मा का ही भवन (होनापना) है। उपाय और उपेय में - दोनों में एक आत्मवस्तु ही अनन्य है। परद्रव्य या रागादि - व्यवहार के विकल्प उसमें अनन्य नहीं हैं अर्थात् दया, दान, व्रत, तप आदि जो बाह्य व्यवहार है, वह निश्चयरत्नत्राय का कारण नहीं है। साधकदशा और उसके फलस्वरूप प्राप्त प्रगट सिद्धदशा - इन दोनों में आत्मा ही अनन्य है।

इसकी बीच की भूमिका में देव-शास्त्रा-गुरु की श्रद्धा और पंच महाव्रतादि के राग की मन्दता का भाव होता है। बस, इतना बताने के लिए व्यवहार की बात की है, निश्चय से बाह्य पंचमहाव्रतादि में साधकपना या मोक्षमार्ग नहीं है; क्योंकि उसमें आत्मा अनन्य नहीं है। शुद्ध चैतन्यवस्तु में थोड़ी लीनतारूप जो मोक्षमार्ग और पूर्ण लीनतारूप जो मोक्ष है - उन दोनों में ज्ञानमात्रा शुद्ध चैतन्यवस्तु ही अनन्य है, एकमेक है तथा साधक को इसके साथ में जो राग है, वह बन्धभाव है, साधकपने में जो विषरूप है, जहर है। निर्मलरत्नत्राय अमृत है व राग जहर है। रागरूप जहर से अमृतरूप मोक्षमार्ग कैसे हो सकता है।

भावपाहुड़ गाथा 83 में आता है कि -जिनशासन में जिनेन्द्रदेव ने ऐसा कहा है कि - पूजा आदि करने में और व्रती होने में 'पुण्य' है तथा मोह-क्षोभ रहित आत्मा का परिणाम 'धर्म' है। वहाँ इसके भावार्थ में स्पष्ट किया है कि - लौकिकजन और अन्यमती कहते हैं कि पूजादि करना एवं व्रतादि का पालन करना धर्म है; परन्तु ऐसा नहीं है। जिनमत में तो जिनेन्द्र भगवान ने ऐसा कहा है कि ये सब 'जैनधर्म' नहीं हैं।

समयसार गाथा 14 में कहा है - जो अबद्धस्पृष्टादि पाँचभाव स्वरूप निज आत्मा को देखता है, वही सकल जैनशासन है। भाई ! जैनशासन तो वीतरागपरिणति है। भाई ! व्यवहार या राग जैनशासन में नहीं है। व्यवहार होता अवश्य है; परन्तु वह मूल जैनशासन नहीं है। (क्रमशः)

यद्यपि शुभाशुभरूप पुण्य और पाप दोनों ही कर्म हैं, कर्मबन्ध के कारण है, आत्मा को बन्धन में डालनेवाले हैं; तथापि अज्ञानीजन पुण्य को अच्छा और पाप को बुरा मानते हैं। अज्ञानजन्य इस मान्यता का निषेध करने के लिये ही आचार्य कुन्दकुन्द ने पुण्य-पाप अधिकार का प्रणयन किया है। **- सार समयसार, पृष्ठ-9**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : पर्याय तो पामर है न ?

उत्तर : पर्याय पामर नहीं है, वह तो सम्पूर्ण द्रव्य को स्वीकारती है, उसे पामर कैसे कहें ? पर्याय में महासामर्थ्य है। सम्पूर्ण द्रव्य को स्पर्श किये बिना उसे स्वीकारती है। ज्ञान की एक पर्याय में इतनी शक्ति है कि छहों द्रव्यों को जान ले। इसकी शक्ति की अलौकिक बात है।

प्रश्न : द्रव्य और पर्याय में से बल किसका अधिक है ?

उत्तर : द्रव्य का बल अधिक है। पर्याय तो एकसमय जितनी ही है और द्रव्य तो त्रिकाली सामर्थ्य का पिण्ड है।

प्रश्न : पर्याय स्वयं सम्पूर्ण वस्तु नहीं है, फिर भी वह सम्पूर्ण वस्तु को कैसे जान लेती है ?

उत्तर : एक मतिज्ञान की पर्याय में भी इतनी शक्ति है कि वह सम्पूर्ण आत्मा को जान ले। पर्याय स्वयं परिपूर्ण वस्तु नहीं है – यह बात तो ठीक है, फिर भी सम्पूर्ण वस्तु को जान लेने की शक्ति उसमें है। केवलज्ञान पर्याय भले ही एक समय की है; परन्तु समस्त स्व-पर को जान लेने की अपार शक्ति उसमें है। पर्याय स्वयं परिपूर्ण वस्तु हो तभी वह परिपूर्ण वस्तु को जान सके – ऐसा नहीं है। जैसे आत्मा छह द्रव्यरूप न होने पर भी छह द्रव्यों को जान लेता है, ऐसी उसकी शक्ति है; उसीप्रकार एक पर्याय यद्यपि सम्पूर्ण वस्तु नहीं है; फिर भी सम्पूर्ण वस्तु को जान लेने की उसकी शक्ति है। जान लेने का कार्य तो केवल पर्याय में ही होता है, द्रव्य-गुण में नहीं होता।

प्रश्न : केवलज्ञानादिक क्षायिकभावों को नियमसार में परद्रव्य कहा है, सो समझ में नहीं आया कि आत्मा में ही होनेवाली पूर्णशुद्धपर्याय को परद्रव्य कैसे कहा ?

उत्तर : जिसप्रकार परद्रव्य में से अपनी पर्याय नहीं आती; उसीप्रकार क्षायिकभावरूप पर्याय में से भी नवीन पर्याय नहीं आती; अपने द्रव्य में से ही शुद्ध पर्याय आती है। इसलिये पर्याय के ऊपर का लक्ष छुड़ाकर द्रव्यस्वभाव का लक्ष कराने के प्रयोजन से केवलज्ञानादि क्षायिकभावों को भी परद्रव्य कहा है। पर्याय के ऊपर लक्ष करने से विकल्पोत्पत्ति होती है; इसलिये पर्याय पर से लक्ष हटाने के लिए उसे परद्रव्य कहा है।

केवलज्ञानादि पर्यायें क्षणिक होने से उन्हें अभूतार्थ भी कहा है और त्रिकाली ध्रुवस्वभाव को भूतार्थ कहा गया है। केवलज्ञानादि को पर्याय होने से व्यवहारजीव कहा है तथा त्रिकालीस्वभाव निश्चयजीव है। यह बात बराबर ध्यान में रखने की है कि क्षायिकभाव को अपेक्षावश परद्रव्य कहा गया है।

प्रश्न : क्या प्रत्येक पर्याय निरपेक्ष और स्वतंत्र है ?

उत्तर : प्रत्येक पर्याय सत् है, स्वतंत्र है; उसे पर की अपेक्षा नहीं। राग का कर्त्ता तो आत्मा नहीं, किन्तु राग का ज्ञान कहना यह भी व्यवहार है तथा ज्ञानपरिणाम को आत्मा करता है – ऐसा कहना भी व्यवहार है। वास्तव में तो उससमय की ज्ञानपर्याय षट्कारक से स्वतन्त्र हुई है।

प्रश्न : सुखानुभव तो पर्याय में होता है तो फिर आत्मद्रव्य की महिमा क्यों गाई जाती है ?

उत्तर : अनुभव की शोभा वास्तव में आत्मद्रव्य के कारण ही है। आत्मद्रव्य कूटस्थ होने से यद्यपि अनुभव में नहीं आता तथा अनुभव तो पर्याय का ही होता है; तथापि जबतक पर्याय द्रव्य को स्वीकार नहीं करती; तबतक अनुभव नहीं होता। जहाँ पर्याय ने द्रव्य को स्वीकार किया, वहीं उसकी शोभा है और वह आत्मद्रव्य के कारण ही है।

प्रश्न : दु:ख का वेदन तो पुद्गल की पर्याय है न ?

उत्तर : किसने कहा कि पुद्गल की पर्याय है? वह तो जीव की ही पर्याय है, दु:ख का वेदन जीव की पर्याय में होता है। यह जीव में से निकल जाता है; अत: जीव का स्वभाव नहीं है तथा पुद्गल के लक्ष्य से होता है; इसलिये द्रव्यदृष्टि कराने के प्रयोजन से उसको पुद्गल की पर्याय कहा गया है; किन्तु दु:ख का वेदन तो जीव की पर्याय में ही होता है, पुद्गल में नहीं।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

टीकमगढ़ (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री 1008 सीमन्धर-शांतिनाथ जिनालय टीकमगढ़ में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन एवं वीतराग-विज्ञान बाल मण्डल टीकमगढ़ के सहयोग से दिनांक 16 फरवरी से 22 फरवरी 2004 तक श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव विविध धार्मिक आयोजनों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रतिदिन प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन से होता था। इसी क्रम में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के पंचकल्याणक के विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित कैलाशचन्दजी 'अचल' भोपाल, डॉ.योगेशजी शास्त्री अलीगंज, डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन आदि विद्वानों के मंगल प्रवचनों का लाभ भी सकल समाज को मिला।

स्थानीय विद्वानों में पण्डित सुरेशजी जैन पिपरा, पण्डित राजेन्द्रजी चंदावली एवं पण्डित अरविन्दजी शास्त्री टीकमगढ़ उपस्थित थे।

महोत्सव की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र.पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित संदीपजी शास्त्री छतरपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़, पण्डित मुकेशजी कोठेदार खनियांधाना आदि सहयोगियों द्वारा शुद्ध-आम्नायपूर्वक सम्पन्न कराई गई।

महोत्सव में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन इन्दौर (मण्डलेश्वर) की ओर से सती अंजना नामक ज्ञानवर्धक एवं वैराग्यप्रेरक नाटक की प्रस्तुति की गई। जन्मकल्याणक के दिन मैनपुरी (उ.प्र.) से आया मणिमयी रत्नजड़ित पालना विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री टोडरमल संगीत सरिता जयपुर, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा मौ, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन खनियांधाना आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। महोत्सव में भारतवर्ष के कोने-कोने से पधारे लगभग 5 हजार जैन साधर्मी बन्धुओं ने भाग लिया। महोत्सव के माध्यम से लगभग 50 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 11 हजार 325 रुपयों के प्रवचनों के 511 ऑडियो एवं सी.डी. कैसिट्स घर-घर पहुँचे। **ह्न आशीष शास्त्री**

तमिलनाडू में धर्म प्रभावना

कीलसात्तमंगलम् (तिरुवन्नामलई) : आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर की ओर से यहाँ दिनांक 21-22 फरवरी को श्री चन्द्रप्रभस्वामी दिग. जैन मंदिर में द्विदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित एल. नाभिराजनजी, पण्डित बालाजी शास्त्री एवं स्थानीय विद्वान एस. पदमकुमारजी द्वारा विद्यार्थियों को बालबोध पाठमाला के माध्यम से जैन सिद्धान्तों का ज्ञान कराया गया।

'भारतीय संस्कृति में कर्म सिद्धान्त व्यवस्था' संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : जैन अनुशीलन केन्द्र राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर में आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय संगोष्ठी मुनि श्री 108 उर्जयन्तसागरजी महाराज एवं साध्वी सुरेखाजी के सान्निध्य में दिनांक 15 से 17 फरवरी तक सम्पन्न हुई।

दिनांक 15 फरवरी को संगोष्ठी का उद्घाटन श्रीमती सुमित्रा सिंह ने किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. के.एल. शर्मा, कुलपति-राजस्थान विश्वविद्यालय ने की। संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल तथा राष्ट्रपति पुरस्कृत प्रो. दयानन्द भार्गव उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि कर्म सिद्धान्त जैनदर्शन और धर्म के लोकहितकारी एवं सार्वभौमिक अबाधित सिद्धान्तों में से एक अद्वितीय सिद्धान्त है। आत्मा का कर्म के साथ संबंध कैसे जुड़ता है ? आत्मा के किन परिणामों से कर्म किन-किन अवस्थाओं में परिणत होते हैं, किस रूप में बदलते हैं। जीव को किसप्रकार से विपाक का वेदन कराते हैं और कर्म क्षय की वह कौनसी विशिष्ट आत्मिक प्रक्रिया है कि अतिशय बलशाली प्रतीत होनेवाले कर्म नि:शेष रूप से क्षय हो जाते हैं आदि बिन्दुओं का अत्यन्त सारगर्भित शैली से प्रतिपादन किया। तथा प्रो. दयानन्द भार्गव एवं एम. ए. अंसारी आदि विद्वानों ने भी अपने विचारों से अवगत कराया।

श्री राजकुमारजी काला ने स्वागत भाषण दिया एवं संगोष्ठी के निर्देशक डॉ. पी.सी. जैन ने समागत सभी विद्वानों का पद्योबद्ध भावभीना परिचय कराया। श्रीमती अनामिका जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इसी अवसर पर अमेरिका (वाशिंगटन) से पधारे नीरेन नागदा एवं श्रीमती जया नागदा का डॉ. पी.सी. जैन द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् समागत सभी विद्वानों का श्री टोडरमल स्मारक भवन में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा स्वागत किया गया एवं ट्रस्ट से संचालित विभिन्न गतिविधियों का परिचय दिया गया। डॉ. पी. सी. जैन ने संस्था की गतिविधियों की प्रशंसा करते हुये कहा कि ऐसी कोई संस्था इस संसार में नहीं है जो जैन धर्म और दर्शन का इसप्रकार से प्रचार-प्रसार कर रही हो। उन्होंने टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे प्रयत्नों की महती आवश्यकता बताई। अन्त में आगन्तुक अतिथियों को भोजनोपरान्त स्मारक ट्रस्ट की ओर से सत्साहित्य भेंट किया गया।

दिनांक 16 फरवरी को संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. टी.सी. कोठारी तथा सारस्वत अतिथि के रूप में श्रुत संवर्धिनी के संपादक डॉ. विजयकुमार जैन एवं प्रो. दामोदर शास्त्री उपस्थित थे। इस सत्र में 10 शोध पत्र पढ़े गये।

संगोष्ठी के पंचम सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की तथा श्री राजकुमारजी काला, डॉ. टी.सी. कोठारी, श्री चिरंजीलाल बगड़ा, श्री एन. के. खींचा (उपायुक्त ज.वि.प्रा.), डॉ. धर्मेन्द्र कांकरिया, श्री बी.एल. बजाज आदि मंचासीन थे।

संगोष्ठी में उद्घाटन एवं समापन सत्र सहित कुल 8 सत्र हुये; जिनमें प्रथम उद्घाटन सत्र राजस्थान विश्वविद्यालय स्थित वी.सी. सेक्रेट्रेट के सीनेट हॉल में, चतुर्थ सत्र ओम रिवाल्विंग टॉवर एवं शेष छह सत्र भट्टारकजी की नसिंया में सम्पन्न हुये। संगोष्ठी में कुल 108 विद्वानों का आगमन हुआ।

'भ. महावीर और वैशाली' विद्वत संगोष्ठी सम्पन्न

पटना (बिहार) : यहाँ दिनांक 15 फरवरी को आयोजित 'भगवान महावीर और वैशाली' नामक विद्वत्संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल ने तथा द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. रंजनदेव सूरि ने की। दोनों सत्रों में लगभग 11 विद्वानों ने ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक, भौगौलिक तथा साहित्यिक दृष्टिकोण से भगवान महावीर की जन्मभूमि वैशाली के वासोकुण्ड-कुण्डपुर को निरूपित किया और यह स्पष्ट किया कि नालन्दा स्थित बड़ागांव कुण्डलपुर किसी भी दृष्टि से भगवान महावीर की जन्मभूमि नहीं है। संगोष्ठी मे भाग लेनेवाले विद्वानों में सर्वश्री राजमल जैन, डॉ.विद्यानंदजी उपाध्याय, डॉ. ऋषभजी फौजदार, डॉ. प्रफुल्लकुमार सिंह, श्री अखिल बंसल, डॉ. रामसकल सिंह, डॉ. विन्देश्वर हिमांशु, श्रीमती रूबीकुमारी, श्री नागेन्द्रप्रसादजी एवं डॉ. जगदीशप्रसाद पाण्डे आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को जानकारी देते हुये डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह ने कहा कि वैशाली में स्थापित करने हेतु भ. महावीर की विशाल प्रतिमा बनकर तैयार है, जो अभी कुन्दकुन्द भारती दिल्ली में विराजमान है। उन्होंने कहा कि वैशाली को अन्तर्राष्ट्रीय नक्शे पर लाने के प्रयास भी चल रहे हैं। 10 फरवरी को माननीय प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी तथा केन्द्रीय रेलमंत्री नीतिश सिंह द्वारा वैशाली को रेल्वे लाईन से जोड़ने का कार्य भी शिलान्यास द्वारा प्रारंभ कर दिया गया है। **– अखिल बंसल**

महाराष्ट्र प्रान्तीय सम्मेलन सम्पन्न

कारंजा (महा.): श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर के अन्तर्गत श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन नागपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 14 एवं 15 फरवरी 2004 को ब्र. यशपालजी जैन जयपुर की प्रेरणा एवं पण्डित आलोककुमारजी शास्त्री कारंजा के सक्रिय सहयोग से आयोजित महाराष्ट्र प्रान्तीय विद्वत एवं कार्यकर्त्ता सम्मेलन श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरूकुल, कारंजा में सानन्द सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन में 40 विद्वान तथा 35 कार्यकर्त्ताओं द्वारा महाराष्ट्र प्रान्त में तत्त्वप्रचार-प्रसार करने हेतु विचार-विमर्श किया गया। सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि स्थायी विद्वानों द्वारा महाराष्ट्र के कोने-कोने में तत्त्वप्रचार किया जायेगा तथा करीब 60 विद्वान जो महाराष्ट्र में सर्विस अथवा व्यवसाय करते हैं, उनका समय-समय पर उपयोग लिया जायेगा।

यह प्रत्येक जिनधर्मप्रेमी के लिये अत्यन्त गौरव व प्रसन्नता का विषय है कि माँ जिनवाणी को श्रवण कराने हेतु आसानी से श्रेष्ठ विद्वान उपलब्ध हो सकेंगे। अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने नगर-ग्राम आदि में तत्त्वप्रचार का आयोजन रखें। आप किस माह की किस तारीखों में कौनसा अनुष्ठान करवाना चाहते हैं तथा आपको कितने विद्वानों की आवश्यकता होगी; इसकी पूर्व सूचना अवश्य प्रेषित करें। **विशेष बात यह है कि विद्वान का सम्पूर्ण खर्च एवं आवागमन व्यय भी संस्था ही वहन करेगी।** इस योजना का शुभारंभ शीघ्र ही एक उद्घाटन समारोह से किया जायेगा, जिसके स्थान एवं तारीख की सूचना आपको यथासमय मिल जायेगी।

साथ ही पण्डित धन्यकुमारजी भोरे, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गंजपंथा एवं पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर के प्रवचन एवं मार्गदर्शन का लाभ भी स्थानीय एवं आगन्तुक महानुभावों को प्राप्त हुआ। **ह्न आलोक शास्त्री, कारंजा**

सम्पूर्ण देश में अष्टाह्निका पर्व सानन्द सम्पन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अष्टाह्निका पर्व के उपलक्ष्य में दिनांक 28 फरवरी से 6 मार्च 2004 तक श्री पंचमेरु नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, बण्डा ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रात: पंचास्तिकाय संग्रह पर एवं रात्रि में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार के ज्ञानतत्त्व प्रज्ञापन अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त अनेक धार्मिक कक्षाओं का भी आयोजन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में महाविद्यालय के उपाध्याय कनिष्ठ के छात्रों का विशेष सहयोग रहा।

2. मुम्बई : श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बृहन्मुम्बई के संयोजकत्व में मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में निम्नानुसार धर्म प्रभावना हुई ह्न

श्री सीमन्धर जिनालय **जबेरी बाजार** में पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, **दादर** में पण्डित सुशीलकुमारजी राधौगढ़, **घाटकोपर** में पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा, **मलाड** में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, **बोरीवली** में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया, **भायंदर** में वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, **दहीसर** में पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ।

3. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर श्री समयसार मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया। ध्वजारोहण श्री समीरकुमारजी जैन परिवार दिल्ली ने तथा विधान का उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ़ ने किया।

इस अवसर पर प्रतिदिन आत्मार्थी पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के दोपहर एवं रात्रि में समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में सी.डी. प्रवचन तथा रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति होती थी।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य श्री हीराचन्दजी बोहरा के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी 'धवल', पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये। **ह्न विजयकुमार जैन**

4. शिरडशहापुर (महा.) : यहाँ श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पण्डित प्रशान्तकुमारजी काले के प्रात: योगसार ग्रन्थ पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

दोपहर में पण्डित रमेशचन्दजी महाजन द्वारा तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में पण्डित प्रेमचन्दजी महाजन द्वारा अष्टपाहुड़ ग्रन्थ के सूत्रपाहुड़ पर मार्मिक व्याख्यान हुए तथा श्री नाभिराजजी महाजन द्वारा बालकक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पूजन-विधान के कार्यक्रम कराये गये।

ज्ञातव्य है कि यहाँ पण्डित प्रशान्तकुमारजी शास्त्री द्वारा विभिन्न धार्मिक अवसरों पर विशेष प्रवचनों के अतिरिक्त दैनिक स्वाध्याय, तत्त्वचर्चा आदि के माध्यम से समाज में विशेष जागृति आयी है।

5. दिल्ली (छावनी) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री, डडूका ने सम्पन्न कराये। इस अवसर पर पण्डित आशीषजी शास्त्री, टीकमगढ़ के रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से स्वाध्याय की महिमा विषय पर प्रवचन हुए।

सत्साहित्य नि:शुल्क मँगा ले।

आध्यात्मिक रुचि सम्पन्न **पण्डित नेमीचन्दजी पाटनी** आगरा द्वारा लिखित 11 पुस्तकों का सैट (कुल पृष्ठ 586 और मूल्य 48/- रुपये) श्री मगनमल सौभागमल पाटनी चैरीटेबल ट्रस्ट, मुम्बई की ओर से मन्दिरों, संस्थाओं, त्यागियों, मुमुक्षुओं को स्वाध्यायार्थ नि:शुल्क भेंट स्वरुप भेजा जा रहा है।

इच्छुक महानुभाव निम्न पते पर डाक खर्च के लिए फ्रेश डाक टिकिट **रुपये 8/- (आठ रुपये)** भेजकर मंगा लेवे। **डाक टिकिट भेजने की अन्तिम तिथि 31 मई 2004 है।**

पता ह्न प्रबंधक, नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग,

श्री टोडमल स्मारक भवन, ए-4 बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015

प्राप्त दान राशियाँ

1. बापूनगर-जयपुर निवासी श्री सुरेन्द्रकुमारजी रांवका ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों से प्रभावित होकर वीतराग-विज्ञान (मासिक) को परम संरक्षक के रूप में 10 हजार रुपये प्रदान किये साथ ही जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) को भी परम संरक्षक के रूप में 10 हजार रुपये प्रदान किये। इसप्रकार आपके द्वारा कुल 20 हजार रुपये की सहायता राशि प्राप्त हुई है।

2. स्व.श्री धन्नालालजी जैन मालथौन की स्मृति में डॉ. बाबूलालजी जैन की ओर से जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 302/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

3. डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई की ओर से अजमेर में आयोजित समयसार मण्डल विधान के उपलक्ष में जैनपथप्रदर्शक समिति को 501/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

सभी दान दाताओं को जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करते हुये हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी इसीतरह आपका सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा।

आगामी कार्यक्रम ...

पधारें, अवश्य पधारें ...

श्री नेमीनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव

कोटा नगर में दिनांक 3 मई से 9 मई, 2004 तक होने जा रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन प्रसंग पर जैनदर्शन के मूर्धन्य विद्वान बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी जैनदर्शनाचार्य छिन्दवाड़ा, पण्डित विमलचन्दजी झांझरी, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन आदि अनेक उच्च कोटि के विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा कार्य बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित अशोककुमारजी अलीगढ़ के निर्देशन में सम्पन्न होगा।

आपके पधारने की सूचना नीचे दिये गये पते पर भेजें; ताकि आवासादि की उचित व्यवस्था की जा सके। **पता-** ज्ञानचन्द जैन, प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यालय, भावना कॉम्प्लेक्स, छावनी चौराहा, कोटा। फोन - 0744-2361957

विदाई समारोह सानन्द सम्पन्न

जयपुर : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी रविवार, दिनांक 29 फरवरी 2004 को शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को भावभीनी विदाई दी गई।

इस अवसर पर शास्त्री अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों में से सौरभ जैन, प्रयंक जैन, ज्ञायक जैन, पराग महाजन, नयनेश जैन एवं हर्षदभाई पांचाल ने समस्त विद्यार्थियों की ओर से महाविद्यालय में व्यतीत पाँच वर्ष के कार्यकाल एवं अपनी भावी योजनाओं के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि दि. जैन आचार्य संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शीतलचन्द जैन तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, प्रो. सतीशजी कपूर, पण्डित श्रेयांसकुमारजी, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पार्षद श्रीमती स्नेहलता शाह आदि मंचासीन थे।

कार्यक्रम के अन्त में शास्त्री अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों को माल्यार्पण, तिलक लगाकर, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया।

संचालन राहुल जैन बिनोता, अभिषेक जैन सिलवानी एवं आशीष जैन जबेरा ने किया।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा भी धर्म प्रचारार्थ दिनांक 17 जून से 18 जुलाई तक अमेरिका जा रहे हैं। उनका वहाँ का कार्यक्रम इसप्रकार है ह्न दिनांक 17 जून से 22 जून तक डलास, 23 जून से 30 जून सियेटल, 1 जुलाई से 5 जुलाई तक सान-फ्रांसिस्को, 6 जुलाई से 11 जुलाई तक मियामी, 12 जुलाई से 18 जुलाई तक वाशिंगटन रहेंगे। ज्ञातव्य है कि अमेरिका प्रवास के दौरान जिन स्थानों पर डॉ.भारिल्ल ठहरेंगे, वाशिंगटन को छोड़कर उन्हीं स्थानों पर पण्डित अभयकुमारजी भी ठहरेंगे। (वाशिंगटन में ह्न रजनीभाई गोसालिया -301-464-5947)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

10 से 11 अप्रैल, 2004	दिल्ली	गुरुदेवश्री जयन्ती
12 से 14 अप्रैल, 2004	दिल्ली	विद्वतपरिषद कार्यकारिणी की मीटिंग व अधिवेशन
17 से 21 अप्रैल, 2004	देवलाली	गुरुदेवश्री जयन्ती
04 से 8 मई, 2004	कोटा	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
09 से 26 मई, 2004	देवलाली	प्रशिक्षण-शिविर
27 मई से 25 जुलाई, 2004	अमेरिका	धर्म प्रचारार्थ
26 जुलाई से 1 अगस्त, 2004	लंदन	धर्म-प्रचारार्थ
08 से 17 अगस्त, 2004	जयपुर	शिक्षण-शिविर

डॉ. भारिल्ल का 2004 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। अमेरिका की यह उनकी 21 वीं विदेश यात्रा है। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, उन्हें वे सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए उन लोगों के फोन एवं फैक्स नम्बर भी दिये जा रहे हैं, जिनके यहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	शिकागो	निरंजन शाह 847-330-1088 डॉ. विपिन भायाणी (घर) 815-939-0056 (ऑ.)815-939-3190 (फै.) 815-939-3159	28 मई से 2 जून
2.	वाशिंगटन	नरेन्द्र जैन (घर) 703-426-4004 (फैक्स) 703-321-7744 E-mail : jainnarendra@hotmail	3 जून से 8 जून
3.	मियामी	महेन्द्र शाह (घर) 305-595-3833 (ऑ.)305-371-2149 E-mail : bhitap@bellsouth.net	9 जून से 13 जून
4.	पिट्सबर्ग	शान्तिलाल मोहनोत 724-325-2058 E-mail : sohumshanti@yahoo.com	14 जून से 19 जून
5.	अटलांटा	राजू शाह (घर) 770-495-7911 (ऑ.) 404-525-8700, 404-786-1791	20 जून से 24 जून
6.	लॉस एंजिल्स	नरेश पालकीवाला (घर) 562-404-1729 (ऑ.) 626-814-8425 (एक्स.8725)	25 जून से 30 जून
7.	सान-फ्रांसिस्को	हिम्मत डगली (घर) 510-745-7468 अशोक सेठी (घर) 408-517-0975 अमरिश सेठी (घर) 408-732-4839	1 जुलाई से 4 जुलाई
8.	सियेटल	प्रकाश जैन (घर) 425-881-6143 (ऑ.)425-707-5308 E-mail : pjain@microsoft.com	5 से 11 जुलाई
9.	क्लीवलैंड	कुशल बैद (घर) 440-339-9519 E-mail : kushalbaid@att.net	12 से 18 जुलाई
10.	डलास	अतुल खारा (घर) 972-867-6535 (ऑ.)972-424-4902(फै.)972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net	19 से 24 जुलाई
11.	लंदन	दिनकर शाह E-mail : dinder_shah@yahoo.co.uk भीमजीभाई शाह (घर) 192-383-6186 E-mail : bhimji@hevika.com	26 जुला. से 1 अग.